



---

shrIsarasvatIgitih

श्रीसरस्वतीगीतिः

Sanskrit Document Information



---

Text title : sarasvatIgitih

File name : sarasvatigiti.itx

Category : devii, sarasvatI, stotra, devI

Location : doc\_devii

Author : Traditional

Transliterated by : WebD

Proofread by : Ravin Bhalekar ravibhalekar at hotmail.com

Latest update : November 19, 2004

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

January 10, 2019

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीसरस्वतीगीतिः



श्री गणेशाय नमः ।

एहि लसत्सितशतदलवासिनि भारति मामकमास्यम् ।

देहि च मे त्वदमरनिकरार्चितपादतले निजदास्यम् ॥ ध्रुवम् ॥ १ ॥

जगदघहारिणि मधुरिपुजाये हिमगिरिजित्वरसिततमकाये ।

श्रुतिततिसंस्कृतपदकमलादृतमिह भुवि नान्यदुपास्यम् ।

भारति मामकमास्यम् ॥ २ ॥

जडतरजीवनमहह मदीयं श्रुतिविरहान्न हि नृषु गणनीयम् ।

निरवधि कृपां कुरुष्व दयामयि व्यपगच्छेन्मम दास्यम् ।

भारति मामकमास्यम् ॥ ३ ॥

विकसितनीलजलजकुलवासे विहितबृहस्पतिसमनिजदासे ।

जननि कृशोदरि मम रसनोपरि विरचय शाश्वतहास्यम् ।

भारति मामकमास्यम् ॥ ४ ॥

भवमुखभावितभवदवदानं रचयतु मानसमविरतगानम् ।

निपततु ते मयि दृगयि दयामयि किमपरमात्मजभाष्यम् ।

भारति मामकमास्यम् ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीसरस्वतीगीतिः सम्पूर्णम् ॥

Proofread by Ravin Bhalekar ravibhalekar@hotmail.com

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

